Peer Reviewed Refereed and
UGC Listed Journal
(Journal No. 47026)

ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - XI, Issue-I,
September - February - 2022-23
MARATHI / HINDI PART - I

Impact Factor / Indexing
2020 - 6.008
www:sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख और लेखक के नाम	पृष्ठ क्र.
१	साहित्य, समाज और संस्कृति का अंत : संबंध **अन्जू बाला**	१-४
२	जया जादवानी के साहित्य में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण **डॉ. सन्जू**	५-९
३	किशोरावस्था में अभिभावकीय प्रोत्साहन का महत्व **प्रीती सिंह** **डॉ. रेखा शुक्ला**	१०-१५
४	आधुनिकता : एक प्रश्नानुकूल मानसिकता **सुश्री आरती गुड़धे** **प्रा. डॉ. संदीप पाईकराव**	१६-१८
५	'संशय की एक रात काव्य' में आधुनिक बोध **डॉ. शेख शहेनाज़ अहेमद**	१९-२२
६	ऋषि पुत्र परशुराम एक अजेय योद्धा **सूरज प्रकाश** **डॉ. सुषमा रानी**	२३-२५
७	बरेली जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की लज्जालू प्रवृति का तुलनात्मक अध्ययन **रमा शंकर** **डॉ. भानु प्रकाश**	२६-३२
८	स्नातक तथा परास्नातक स्तर के श्रवणयुक्त विद्यार्थियों में श्रवण बाधित विद्यार्थियों के साथ संप्रेषणात्मक कौशल का अध्ययन **ज्योति मिश्रा**	३३-३६
९	बरेली जनपद के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स से पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन **Ajay** **Dr. Bhanu Prakash**	३७-४२
१०	कॉलेज के छात्र एवं छात्राओं के तनाव, चिंता पर योग शिक्षा का उपचारात्मक प्रभाव **मोनिका पंवार**	४३-४७

VOLUME - XI, ISSUE - I - SEPTEMBER - FEBRUARY - 2022-23
IDEAL - ISSN - 2319 - 359X - IMPACT FACTOR - 6.008 (www.sjifactor.com)

५. 'संशय की एक रात काव्य' में आधुनिक बोध

डॉ. शेख शहेनाज़ अहेमद
हिंदी विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशिका, हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, ता. हिमायतनगर, जि. नांदेड.

तारसप्त के यशस्वी कवि तथा 'उत्सव पुरूष' नरेश मेहता की नई कविता को एक नई दृष्टि प्रदान की है। 'संशय की एक रात' जैसी कृति ने नई कविता के कथ्य को प्रबंधात्मक शिल्प देकर व्यापक दृश्य प्रदान किया है। भारतीय ऐतिहासिक व प्राचीन दो महाकाव्य रामायण और महाभारत के महत्वपूर्ण विमर्शों को अपनी प्रतिभा द्वारा युगानुरूप वाणी देकर प्राचीन मिथकों को आधुनिकता की कसौटी पर कस कर उन्हें आधुनिक संदर्भ में अति प्रासंगिक बना दिया है।

'संशय की एक रात' इस काव्य में नरेश मेहता ने उपजीव्य कथा के रूप में रामायण के महत्वपूर्ण बीजप्रसंग 'सिंधु तट पर सेतुबंध के पश्चात की घटना' को इस काव्य का आधार बनाया हैं। 1962 में चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में लिखा गया यह खंडकाव्य युगीन संदर्भ में अति प्रासंतगिक है। कवि ने मिथक के सहारे समकालीन परिवेश के आधुनिक बोध को उभारा है। कवि ने अन्य कवियों की भाँति सांस्कृतिक गौरव की खोज नही की, बल्कि पुरानी कथा में 'वस्तु' नवीनता लाने के माध्यम से युग की जटिल स्थितियों को उकेरा है।

'संशय की एक रात' का कथानक राम कथा के उस अंश से संबंधित है जिसमें लंका-युद्ध की तैयारी में सेतु-बंध चुके है और उसका कथ्य है युद्ध की समस्या और उससे संबंधित प्रश्नों पर चिंतन। 'संशय की एक रात' के चार सर्ग है – (1) साँझ का विस्तार और बालू तट, (2) वर्षा भीगे अंधकार का आगमन, (3) मध्यरात्री की मंत्रणा और निर्णय, (4) संदिग्ध मन का संकल्प और सवेरा। साँझ का विस्तार और बालू तट सर्ग में राम रामेश्वर के सिंधु तट पर अनेक प्रश्नों से घिरे सामने आते है। वे सीताहरण को अपनी व्यक्तिगत समस्या मानकर युद्ध को टालना चाहते है। युद्ध की पूर्वरात्रि पर सेनानायक श्रीराम के मन में यह प्रश्न उठना अत्यंत स्वाभाविक है कि क्या युद्ध अनिवार्य है। क्या युद्ध के बिना शांति संभव नहीं / राम के मन की दुविधाग्रस्त स्थिति के चरम विकास के लिए नरेश मेहता सिंधु तट को सर्वाधिक उचित मानते है। उनके मत में, "अपने विशेष प्रयोजन के लिए राम कथा का मैंने यह स्थल चुना, जो घटनाहीन था, किंतु मेरी रचना संभावना के लिए उर्वर। राम जिस द्विधा को प्रस्तुत करते है, उसके लिए यही उपयुक्त स्थल था – यह अंतरीय मन का, स्थल का।" (1) राम का मन युद्ध और युद्ध के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों और युद्ध परिणामों के विषय में अनेक संकल्पों-विकल्पों के बीच दोलायमान होने लगता है। युद्ध की सारी तैयारियाँ पूरी हो चूकी है, ऐसे मौके पर भी उनके मन का संघर्ष चढने-उतरने लगता है। विषम परिस्थितियों के कारण उनका मन आकांत होने लगता है, ऐसी अवस्था में वे स्वंय के अस्तित्व को ही निरर्थक मानने लगता है।

संशय की स्थिति में व्यक्ति किसी कार्य या परिस्थिति के करने न करने, होने न होने की संभावना में उलझा रहता है और एक निर्णय पर पहुँचने तक इसी मनोदशा में डुबता-उतरता रहता है। राम भी इसी मनोदशा में है। वे संशय की स्थिति में युद्ध और शांति जैसे दो विपरित दिशाओं के मध्य उस स्थिति में पहुँच जाते है, जहाँ मूल्यों की टकराहट होती है। राम की इसी मनोदशा के माध्यम से युद्ध जैसे महत्वपूर्ण विषय का विवेचन इस खंडकाव्य को कालजयी बना देता है। राम कहते है –

"यदि मै मात्र कर्म हूँ तो यह कर्म का संशय है।
यदि मैं मात्र क्षण हूँ तो यह क्षण का संशय है।
यदि मैं मात्र घटना हूँ तो यह घटनाका संशय है।" (2)

इस खंडकाव्य के दूसरे सर्ग 'वर्षा भीगे अंधकार का आगमन' में राम पुन्ह: चिंताग्रस्त दिखाई देते है। उन्हें रक्त पर विजय नहीं चाहिए। वे रक्तरंजित विजयश्री को अस्वीकार करते हुए कहते है –

"मुझे ऐसी जय नही चाहिए
बाण बिद्ध पाखी सा विवश
साम्राज्य नही चाहिए
मानव रक्त पगधरती आती
सीता भी नही चाहिए
सीता भी नहीं।" (3)

इस सर्ग में लक्ष्मण राम को सिंधु तट पर अकेला छोड़कर हनुमान जी के साथ विभीषण के शिबिर-द्वीप की ओर चले जाते है। वर्षा होने लगती है। राम चाहते कि वर्षा में भीगकर उनकी संशय खंडित आत्मा शांत हो जाए। "वे सोंचते है कि क्या युद्ध में ही सत्य संभव है, मानव का मानव से सत्य संभव नहीं?" (4) दशरथ की आत्मा भी राम को संदेश देती है कि बिना युद्ध के सत्य तथा अधिकार की प्राप्ति और रक्षा असंभव है। आज तक कीर्ति, नारी, जय, लक्ष्मी आदि भिक्षा से नहीं, वर्चस्व से अर्जित हुए है। "यहाँ धर्म और अधर्म, जय-पराजय कुछ नहीं, यहाँ सब कर्तव्य है और कर्म के प्रति अनासक्ति 'का पुरूषता' है।"(5) राम को युद्ध के परिणाम के विषय में संशय नहीं, मानव नियति के विषय में संशय है। राम को असत्य से युद्ध करने का संदेश देकर छायात्मा विलीन हो जाती है।

'संशय की एक रात' की समस्त घटनाएँ एक ही रात के भीरत घटित होती है। कथा का प्रत्येक पात्र मिथकीय होते हुए भी वर्तमान संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। "इस एक रात का संघर्ष युद्ध और शांति का, पक्ष-विपक्ष का, विपरीत ध्रुवों का संघर्ष है। राम यदि संशयग्रस्त व्यक्त के प्रतिनिधि है, तो लक्ष्मण लघु मानव के प्रतीक है। राम जिस विराटत्व की कल्पना में क्षण के विवेक को निष्ठ और विकल्प को कर्म और वर्चस्व को शंकालु होकर अपने अलग कर देना चाहते हैं, वहीं पर लक्ष्मण इनकी परंपरागत अर्थवत्ता में अर्थ के नए स्वर जोडते है।"(6)

'संशय की एक रात' का तिसरा सर्ग 'मध्यरात्रि की मंत्रणा और निर्णय' में युद्ध परिषद की बैठक होती है। राम सदस्यों के समक्ष युद्ध की समस्या को पेश करते है और उनके सामने सीता के अपहरण को व्यक्तिगत समस्या बताते है। राम की दृष्टि में युद्ध एक फेन है। यह आवश्यक नहीं कि युद्ध की परिणति शांति और सुरक्षा में ही हो। राम के कथन पर टिप्पणी करते हुए हनुमानजी कहते है कि भावी युद्धों की आशंका से डरकर न्याय और अधिकार को छोड़ा नहीं जा सकता। इस प्रकार हनुमान और लक्षमण जहां प्रजा का प्रतिनिधित्व करते है वहीं सीता साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता है, जिसको पाना उनका पूर्णकर्तव्य है –

"हम कोटि-कोटि जनों की तो केवल प्रतीक है
रावण अशोक बन की सीता,
हम साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता।" (7)

और अपनी इस सीता के प्रतीक को नरेश मेहता सुमित्रानंदन पंत प्रेरणा स्वरूप अर्पित करते है।

'संदिग्ध मन का संकल्प और सवेरा' सर्ग राम के संशय और विकल्प को समाप्त करके संकल्प में बदल देता है। उनके मुख पर तनाव कम हो जाता है। अब वे व्यक्तिगत संकल्पों विकल्पों की सीमाओं से निकल कर सूर्योदय वैश्नार और ऋतम्भरा को वरण करने को आतुर प्रतीत होते है।

राम का मानसिक संकट मूलत: उत्तरदायित्व का संकट है। इस काव्य के राम तो मात्र अपनी विडम्बना पूर्ण स्थिति पर सोंचते है, विचार करते है। उनकी यह विडम्बना युग जीवन की विडम्बना बन चूकी है। कवि ने पुराण कथा के मूल स्वरूप को हानी पहुँचाए

बीना असे युग संदर्भ प्रदान किया है। इस काव्य के राम सहज मानवता में विश्वास रखते है। उनकी आस्था भी यहीं है कि मानव को मानव से सहज मानवीय आधार पर ही सत्य की उपलब्धि हो। राम के मन में संशय है कि क्या सारे शुभाशुभ कर्मो की परिणिती युद्ध ही है? कवि युद्ध को अस्वीकार करते हुए राम से कहलाता है –

"मैं सत्य चाहता हूँ
युद्ध से नहीं,
खड्ग से भी नहीं,
मानव मा मानव से सत्य चाहता हूँ
क्या यह संभव है?" (8)

राम की संशयग्रस्त मन:स्थिति उनकी दुर्बलता नहीं वरन मानवीय सत्यों और मूल्यों की स्थापना है और संरक्षण, शांतिमय तथा अहिंसा के उपायों की खोज है। उनके संशय के भूल में व्यक्तिगत हानी नहीं बल्कि युद्ध से बचने की लोक-संग्रहीच संवेदना है। यह संशय किसी असमर्थ या अविवेकी का नही व्यापक जनहित का उदत्त लक्ष्य है। इसलिए राम संशय को सत्य ही नहीं परम सत्य और ऋत का भी निकष मानते है।

राम हिंसा और अहिंसा के द्वंद्व में फंसकर द्विधाग्रस्त हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें अहिंसा प्रिय है। नरेश मेहता भी गांधीवादी अहिंसा के पक्षधर है। उन्हें लगता है कि, 'हमारी विकास यात्रा हिंसा से अहिंसा की ओर जा रही है। जबकि शेष मानवता की यात्रा हिंसा से घोर हिंसा की ओर।' राम भी मानवता के पुजारी है, इसलिए वे कहते है कि युद्ध दायित्व है आवेश नहीं।

मनुष्य जीवन में जितनी भी स्थितियाँ-परिस्थितियाँ आती है, उनके संबंध में जिज्ञासाएँ, संशय उठना, कार्य के निर्णय-अनिर्णय की स्थितियाँ बनना स्वाभाविक है। ऐसी ही स्थिति राम के शंकाकुल मन की है। उन्हें युद्ध जितने या हारने का डर नहीं है। वे कापुरूष भी नहीं है।

"लक्ष्मण मैं नही का पुरूष
युद्ध मेरी नहीं है कुंठा
पर युद्ध प्रिय भी नहीं।" (9)

लेकिन युद्ध की सार्थकता पर प्रश्नचिह्न लगाते है, उनके अनुसार जब तक हो सके, युद्ध को टालना चाहिए –

"इतिहास के हाथों बाण बनने से अधिक अच्छा है
स्वंय हम अंधेरे में यात्रा करते हुए खो जाएँ
किसी के हाथों सही, पर विपत्ति खोना है।" (10)

वे सोंचते है कि क्या रावण का वध किए बिना रावणत्व को खत्म किया जा सकता ह। सीता रूपी समस्त मानवता को अंधकाररूपी रावण में विलिन होने दिया जाए या फिर युद्ध करके सृष्टि के आतंक से मुक्त कर रामराज्य की स्थापना का लक्ष्य पूरा किया जाए और नवीन आदर्श मानव समाज का निर्माण किया जाए। वस्तुत: उनका द्वंद्व रावण से नहीं रावणत्व से आसुरी प्रवृत्ति से है। इसीलिए वे रावण से वैर नहीं रखते और युद्ध का विकल्प खोजना चाहते है।

नरेश मेहता की दृष्टि से वाह्य युद्ध की अपेक्षा राम का आंतरिक युद्ध विशेष महत्वपूर्ण है। राम के अंतर्द्वंद्व की सामाहित में हमारे वर्तमान समाज और राष्ट्र जीवन का एक महत्वपूर्ण संदर्भ अंतर्निहित है। पुराण कथा के मूल स्वरूप को हानि पहुँचाए बिना नरेश मेहता ने उसे युगीन संदर्भ प्रदान कर दिया है।

इस प्रकार संशय की एक रात का सेतुबंध व्यष्टि और समष्टि मन के सेतुबंध अर्थात समन्वित मानव चेतना का प्रतीक है, जो युद्ध और शांति की आत्ममंथन और सामूहिक दायित्व बोध की, आधुनिक युग के खंडित व्यक्तित्व और भौतिकवादी मूल्यों के भागने जैसी प्रश्नों का समाधान खोज पाना सहज और आसान नहीं, लेकिन मानव की खोज निरंतर जारी रहेगी।

संदर्भ

1. नरेश मेहता – संशय की एक रात – पृ. 54
2. वही – पृ. 62
3. वही – पृ. 40
4. वही – पृ. 39
5. वही – पृ. 13
6. लक्ष्मीकांत वर्मा – आधुनिक कविता की उपलब्धि – पृ. 7
7. सूमित्रानंदन पंत
8. नरेश मेहता – संशय की एक रात – पृ. 39
9. वही – पृ. 19
10. वही – पृ. 21